शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अन्य भाषा के रूप में हिंदीभाषा शिक्षण की व्यावहारिक समस्याएँ

डॉ. आशा पाण्डेय
असोसिएट प्रोफेसर
आत्मा राम सनातन धर्म कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली, भारत

शोध संक्षेप

वसुधैव कुटुंबकम् की कल्पना जो प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति में रचीबसी थी, वह आज ग्लोबलाईजेशन के नाम से जानी पहचानी जाने लगी है। जब पूरा विश्व एक गाँव की अवधारणा में बँधने लगा हो, तब आपसी समझ के लिए भाषा भी अनिवार्य होती है। वैसे भी भाषा मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकता है। इसी के माध्यम से मानव समाज विशेष में अपने अंतर्विचारों और भावों का संप्रेषण कर पाता है। भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम भर नहीं होती, वह जीवन और व्यक्तित्व का विकास, परिष्कार करने वाली शक्ति भी होती है। भाषा अपने को प्रकट करने की कला भी है और ज्ञान की दुनिया में खुलता द्वार भी। विश्व में तमाम भाषाएँ बोली और लिखी जाती हैं। भाषा का सौंदर्य मूलतः इस पर निर्भर करता है कि उसके प्रयोक्ता को उसकी पूरी समझ हो। उसके पास विपुल शब्दभंडार हो और उसे शब्दार्थ का सम्यक् ज्ञान हो। अपनी मातृभाषा के स्तर पर तो दिक़्क़तें कम आती हैं क्योंकि माँ के सान्निध्य में परिवार तथा वातावरण अपने तरीक़े से छोटे बच्चों को मातृभाषा सिखला देते हैं लेकिन अन्य भाषा के धरातल पर कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यहाँ औपचारिक शिक्षण की आवश्यकता पड़ती है। जब कोई अहिंदी भाषी द्वितीय अथवा अन्य भाषा के रूप में हिंदी सीखना चाहता है तो उसे अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है। ये व्यावहारिक समस्याएँ कौन-कौन-सी हैं और किस स्तर की हैं ? इन्हें कैसे दूर किया जा सकता है ? अभिरचना, अभ्यास के द्वारा इन व्यावहारिक समस्याओं को सुलझाया जा सकता है।

बीज शब्द : *हिंदी भाषा, भाषा शिक्षण, हिंदीतर प्रदेश, मातृभाषा, व्याकरण, औपचारिक, अभिरचना।*

प्रस्तावना

भाषा शिक्षण सैद्धांतिक स्तर पर जितना आसान प्रतीत होता है, व्यावहारिक धरातल पर उतना ही अधिक जटिल होता है। भाषा शिक्षण की अनेक पद्धतियाँ विकसित हुई हैं। भाषा शिक्षण से तात्पर्य है 'भाषा की की शिक्षा देना।' संक्षेप में "भाषा शिक्षण से आशय है किसी भाषा के बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने की शिक्षा देना।"[1]

बोलना अर्थात् भाषण का अर्थ है स्वर-व्यंजन के उच्चारण, संगम, अनुतान, बलाघात तथा व्याकरणिक नियमों आदि की दृष्टि से सही बोलना। सुनना अर्थात् श्रवण का अर्थ है, सही ढंग से सुनना। पढ़ना अर्थात् किसी लिखित सामग्री को पढ़कर सही ढंग से समझ लेना तथा लिखना अर्थात् लेखन का अर्थ है वर्तनी और व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध रूप में और अर्थ की दृष्टि से सही और तर्कसंगत लिखना।

हिंदी भाषा शिक्षण की व्यावहारिक समस्याएं

भाषा शिक्षण के संदर्भ में भाषा के मुख्यतः दो प्रकार हैं (क) मातृभाषा (ख) अन्य भाषा। लेकिन

कुछ अंतर भेद से हम इसका वर्गीकरण इस प्रकार कर सकते हैं : 1 प्रथम भाषा, 2 मातृभाषा 1 स्वभाषिका 2 स्वभाषिकेतर भाषा (i) सन्निहित प्रयोजक (ii) आरोपित प्रयोजक 3 अन्य भाषा : 1 क्षेत्र की दृष्टि से : (i) स्वदेशी भाषा (a) समस्रोतीय भाषाए (b) विषमस्रोतीय भाषाय (ii) द्वितीय भाषा (iii) विदेशी भाषा (a) स्वजातीय भाषाए (b) विजातीय भाषा।

2 प्रयोग की दृष्टि से (i) पुस्तकालयी भाषा (ii) समतुल्य भाषा (iii) संपूरक भाषा (iv) संपर्क भाषा और (v) परिपूरक भाषा।[2]

अन्य भाषा शिक्षण के रूप में जब हिंदी शिक्षण पर बात चलती है तो द्वितीय भाषा तथा विदेशी भाषा शिक्षण के मुख्य अन्तर को समझना आवश्यक हो जाता है। भारत के हिंदीतर भाषियों तथा हिन्दी भाषियों के बीच सामाजिक सम्पर्क होने के कारण उनमें परस्पर सांस्कृतिक एवं भाषिक एकता के सूत्र विद्यमान हैं, जबकि विदेशी भाषियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अलग होने के कारण उनको हिंदी भाषा के सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों को भी सिखाने की आवश्यकता होती है। प्रशिक्षु की मातृभाषा से द्वितीय भाषा शिक्षण और विदेशी भाषा शिक्षण दोनों ही इतर अथवा अन्य भाषा शिक्षण हैं।

हिंदी भाषा को भारतीय संविधान में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है, लेकिन वास्तविकता कुछ और ही है। इसे वास्तविक रूप देने के लिए सरकारी तथा असरकारी तौर पर अनेक कदम उठाए गए हैं। हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी शिक्षण इसी राह में एक कदम है। प्राथमिक स्तर पर कुछ पाठ्य पुस्तकों का निर्माण हो चुका है, परंतु हिंदी मातृभाषा-भाषी की तुलना में अन्य भाषा के रूप में हिंदी सीखने-सिखाने में कुछ मुश्किलों से विशेषतः ध्वनि, व्याकरण और अर्थ आदि के स्तर पर दो-चार होना पड़ता है। हिंदी भाषा को अन्य भाषा के रूप में सीखने वाले प्रशिक्षु में रुचि, उद्देश्य के अतिरिक्त जिज्ञासा का होना अत्यंत आवश्यक है। जब तक उसके मन में अन्य भाषा के प्रति जिज्ञासा नहीं होगी, तब तक उसे वह भाषा सीखना बोझिल प्रतीत होता रहेगा। लेकिन यदि अन्य भाषा के प्रति जिज्ञासा होगी तो वह भाषा के अलग-अलग पहलुओं, संदर्भों को जानने का प्रयत्न भी करेगा। वह भाषा को उसकी संरचना से लेकर समाज में भाषा के महत्व के सभी पहलुओं पर चर्चा भी करेगा। 1 सबसे पहली समस्या उच्चारण के स्तर पर आती है। (क) प्रशिक्षु की मातृभाषा और अन्य भाषा की जिन ध्वनियाँ में समानता होती है, वहाँ अधिक समस्या नहीं आती है। जिन ध्वनियों में एकरूपता नहीं होती है, तो शुद्ध उच्चारण की समस्या उत्पन्न हो जाती है। जैसे अहिंदी भाषी हिंदी सीखते समय अपनी मातृभाषा के अनुसार और अपने वाक्यंत्र की बनावट के कारण अल्पप्राण ध्वनियों (क, च, ट, त, प आदि) को महाप्राण ध्वनियों (ख, छ, ठ, थ, फ आदि) तथा महाप्राण ध्वनियों को अल्पप्राण ध्वनियों के रूप में उच्चरित करता है। जैसे वह 'पटक' का उच्चारण 'फठख' करता है और कहीं 'घर' को 'गर', 'झंडा' को 'जंडा', 'भाषा' को 'बाशा' कर देता है। हिंदी की 'ड़' एवं 'ढ़' ध्वनियों के उच्चारण में भी समस्या आती है। (ख) बलाघात और अनुतान के स्तर पर भी कठिनाई आती है। किसी ध्वनि शब्द पर विशेष बल देने से अर्थ में परिवर्तन आ जाता है। यह प्रशिक्षु को समझाने में विशेष प्रयत्न की आवश्यकता होती है। हिंदी मातृभाषा-भाषी उन्हें आसानी से समझ लेगा, जबकि अन्य भाषा-भाषी प्रशिक्षु को 'अच्छा' के

अनुतान के आधार पर हुए अर्थभेदों को समझने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

2 व्याकरण के स्तर भी समस्याएँ कम नहीं होती हैं। शब्द रचना के स्तर पर अन्य भाषा शिक्षण के समय जब मातृभाषा के नियम हावी रहते हैं, तब गड़बड़ी हो जाती है। उपसर्ग, प्रत्ययों के प्रयोग के संदर्भ में ऐसा देखने को मिलता है। जैसे लड़का+पन=लड़कपन, लड़की+आँ=लड़कियाँ। समास में सुख-दुःख, माता-पिता, सुबह-शाम आदि में 'और' लुप्त है, इसे समझाया जा सकता है, परंतु 'दहीबड़ा', 'देशभक्त', 'यथासंभव' आदि समास को समझा पाना कठिन है।

रूप-रचना, लिंग, वचन के स्तर भी समस्याएँ उपस्थित रहती हैं। लक्ष्य भाषा की व्याकरणिक संरचनाओं के बारे में कुछ प्रारम्भिक निर्देश एवं संकेत देने के उपरांत भी समस्याएँ रह जाती है। 'लड़का अच्छा है। 'चाचा अच्छा है।' लेकिन 'लड़के को रोटी दो।' 'चाचा को रोटी दो।' कैसे हो गया ? ऐसी ही समस्या विशेष्य एवं विशेषण के प्रयोग में आती है। 'सुन्दर लड़का', 'सुंदर लड़की' लेकिन 'अच्छा लड़का', 'अच्छी लड़की' क्यों हुआ ? लिंग की दृष्टि से नर-नारी तो होता है पर पुरूष-पुरूषी नहीं बन सकता। बहुवचन में 12 केले तो हो सकता है, पर 12 अमरूदें नहीं हो सकता। प्रेरणार्थक क्रिया रूपों में भी समस्याएँ आती हैं। 'खिलाना', खिलवाना' प्रथम प्रेरणात्मक में 'आ' और द्वितीय प्रेरणात्मक में 'वा' जोड़ा जाता है। 'न', नहीं, मत, नकारात्मक क्रियाविशेषण क्रिया से पहले आते हैं। जैसे 'शोक न करें।' 'तुम वहाँ मत जाना।' 'असत्य नहीं बोलना चाहिए।' भाषा का व्यावहारिक ज्ञान न होने के कारण प्रशिक्षु अशुद्ध प्रयोग कर जाता है। जैसे 'असत्य मत बोलना चाहिए।'

हिंदी भाषा में सर्वनाम में मध्यम पुरुष, एकवचन के लिए 'तू' और तुम दोनों का और बहुवचन के लिए 'तुम' और 'आप' दोनों का प्रयोग किया जाता है और अन्य पुरुष एकवचन में 'वह' और 'वे' दोनों का प्रयोग होता है। इसे समझना द्वितीय तथा अन्य भाषा शिक्षण के प्रशिक्षुओं के लिए एक समस्या है। 'मुझे/इसे/उसे रोटी खानी है' के स्थान पर 'मैंने/इसने/उसने रोटी खानी है' की गलती भी वे अक्सर कर जाते हैं। 'ने' का प्रयोग समझने में भी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। हिंदी में लेखन के स्तर पर सर्वनामों के साथ परसर्ग जोड़कर लिखे जाते हैं। जैसे 'मैंने, आपको, तुमसे, उसमें', लेकिन संज्ञा के साथ ऐसी स्थिति नहीं होती। वहाँ परसर्ग अलग लिखे जाते हैं। जैसे 'राम ने, सीता को, लक्ष्मण से, पेड़ पर' आदि।

अन्य भाषा-भाषी जब हिंदी सीखते हैं, नासिक्य व्यंजन और अनुनासिक के प्रयोग के जाल में उलझ जाते हैं कि 'सुंदर' लिखें या 'सुन्दर'! 'संपर्क' लिखें या 'सम्पर्क' और यदि शुद्ध लिख भी लें तो उच्चारण कैसे करें ? अंग्रेज़ी जैसी भाषाओं में अनुस्वार और अनुनासिक दोनों को एक ही लिपि चिह्न से व्यक्त किया जाता है। वहाँ शिक्षक को इनके उच्चारणगत अंतर समझाने में विशेष सावधानी बरतनी पड़ती है।

वाक्य रचना में मातृभाषा के व्याघात के कारण कई समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं। पदक्रम संबंधी समस्या वहाँ होती है, जहाँ दोनों भाषाओं के पदक्रम में अंतर होता है। भी, तो, ही, भर, तक आदि अव्यय उन्हीं शब्दों के पीछे आते हैं, जिनके विषय में वे निश्चय प्रकट करते हैं अथवा बल देते हैं। जैसे 'आप भी चाय पियोगे ? 'आप' पर बल। आप चाय भी पियोगे ? 'चाय' पर बल। 'मयंक ही कॉलेज गया था।' 'मयंक' पर बल। 'मयंक कॉलेज ही गया था।' 'कॉलेज' पर बल।

वाक्यों के विभिन्न पदों के बीच तर्कसंगत निकटता होनी चाहिए। जैसे 'बेबी को हिलाकर दवाई पिलाओ।' 'ठंडी बर्फ़ का पानी लाओ।' इन वाक्यों का पदक्रम तर्क संगत नहीं है। सही पदक्रम है 'बेबी को दवाई हिलाकर पिलाओ।' बर्फ़ का ठंडा पानी लाओ।' तर्क संगति का ध्यान रखना आवश्यक है, नहीं तो हम 'नदी में पानी है' के स्थान पर 'पानी में नदी है' का प्रयोग सही मान बैठेंगे।

अन्वय के स्तर भी द्वितीय तथा अन्य भाषा शिक्षण के प्रशिक्षुओं को कठिनाई का सामना करना पड़ता है। कामताप्रसाद गुरू के अनुसार "दो शब्दों में लिंग, वचन, पुरूष, कारक अथवा काल की जो समानता रहती है उसे अन्वय कहते हैं।"[3] हिंदी में क्रिया का अन्वय कभी कर्ता के साथ होता है और कभी कर्म के साथ। जैसे 'मुकुल किताब पढ़ता है', 'मुकुल ने किताब पढ़ी।' जब कर्ता (उद्देश्य) एकवचन है परंतु वह आदर योग्य है, तो उसके साथ क्रिया के बहुवचन रूप का प्रयोग होता है। जैसे 'पिता जी कानपुर गए हैं।' द्वितीय और अन्य भाषा शिक्षण में प्रशिक्षु 'ने', 'को' आदि के प्रयोग और उसके महत्व को नहीं समझ सकता। अतः आधिकारिक अभिरचना अभ्यास द्वारा ऐसी अभिव्यक्तियों को अधिकाधिक उसकी भाषाई आदत में शामिल करना चाहिए। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वे किस स्तर पर बताई जाएँ। द्वितीय या अन्य भाषा शिक्षण में पाँच वर्ष के प्रशिक्षु को शिक्षा आरंभ करने के एक महीने बाद संज्ञा से प्रारंभ प्रश्न का उत्तर सर्वनाम से देने का अभ्यास नहीं कराना चाहिए, जबकि अपेक्षाकृत बड़ी आयु के प्रशिक्षुओं को ऐसा अभ्यास कराया जा सकता है। इसी प्रकार संयुक्त व्यंजन और द्वित्व व्यंजन का अभ्यास भी प्रारंभ से नहीं करना चाहिए।

3 लेखन के स्तर पर संयुक्त व्यंजन और द्वित्व व्यंजन में एक ही रचना को दो प्रकार से लिखना सीखने वाले के लिए समस्या उत्पन्न करता है। अतः उसमें एक ही रूप का अभ्यास कराना चाहिए। 'र' के सभी रूपों 'र, ट्र, ग्र, र्, र में 'उ ऊ' की मात्रा का अलग रूप - ' तथा 'इ ई' की मात्राओं का प्रयोग तथा 'इ' की मात्र का एक, दो, तीन व्यंजन पहले (चन्द्रिका) लगाने की स्थिति तो मातृभाषा शिक्षण में भी कठिनाई उत्पन्न करती है।

निष्कर्ष

प्रत्येक भाषा की अपनी विशिष्ट प्रकार की संरचना अथवा आंतरिक व्यवस्था होती है, जिसमें ध्वनि, क्रम, शब्दक्रम वाक्य आदि के विशिष्ट पैटर्न सांचे (अभिरचना) होते हैं। इन पैटर्न के बार-बार दोहराने अथवा अभ्यास को 'अभिरचना अभ्यास' कहते हैं। इसकी आवश्यकता अन्य भाषा शिक्षण में होती है। द्वितीय या अन्य भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण में अनेक प्रकार की व्यावहारिक समस्याएँ आती हैं, जिनका 'अभिरचना अभ्यास' में विशेष ध्यान रखकर प्रशिक्षु को हिंदी भाषा में निपुण बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ

1 हिंदी भाषा शिक्षण, संपा. भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ 9, लिपि प्रकाशन, दिल्ली

2 अन्य भाषा शिक्षण, मुकेश अग्रवाल, पृष्ठ 25, यूनिवर्स पब्लिशर्स, दिल्ली

3 हिंदी व्याकरण, कामताप्रसाद गुरू, पृष्ठ 479, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

4 भाषा शिक्षण, रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड

5 अन्य भाषा शिक्षण के कुछ पक्ष, अमर बहादुर सिंह केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा